Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-4 | Issue-4 | May-2014 Available online at www. isrj.net

भारतीय हिन्दी पत्रकारिता के विकास का आलोचनात्मक अध्ययन

मिर्ज़ा नादिर बेग

स्वतंत्र टिप्पणीकार,हैदराबाद

सारांश : भारत में पत्रकारिता की शुरुआत किन परिस्थितियों में हुई ये जानना बहुत रोचक है । वे कौन-कौन से मुद्दे थे जिनको सामने लाने के लिए ,आम जनता भले ही न सही लेकिन असंतुष्ट मुलाज़िम किस तरह से सामने आए , और एक दिमागी लड़ाई की शुरुआत की।

उन हालात में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि भारत में कोई भी अंग्रेजी या भाषाई समाचार पत्र वजूद में नहीं आ पाया था,हालांकि कंपनी द्वारा 1674ई. में ही मुंबई में प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना कर चुकी थी। और उसे काफी मात्रा में टाइप और कागज की आपूर्ति की प्रक्रिया भी शुरू हो चुकी थी। एक दूसरा प्रेस मद्रास में 1772ई.में स्थापित किया गया और एक सरकारी प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना 1779ई.में कोलकाता में की गई।

ईस्ट इंडिया कंपनी के बड़े पदों पर बैठे अधिकारियों को इस बात का एहसास हो गया था कि विलियम बोल्ट्स अब कोई न कोई समाचार पत्र का प्रकाशन ज़रूर करेगा। और उसके प्रकाशन के साथ ही कई लोगों के भ्रष्टाचारी चेहरे भी सामने आएँगे। विलियम बोल्ट्स को लेकर कंपनी में एक दहशत का माहौल था। आखिरकार वही हुआ जिसका अंदाज़ा था,18 अप्रैल 1868ई.को कंपनी के तरफ से फरमान आया,और हुक्म दिया गया कि वो जल्द से जल्द बंगाल को खाली कर दे। आखिरकार उसको इंग्लैंड जाना पड़ा। जहाँ उसने अपनी भड़ास एक किताब लिखकर निकाली। उस किताब में कंपनी में व्याप्त भ्रष्टाचार की पूरी कहानी है।

प्रस्तावना :-

इस कोशिश के अगले 12 सालों तक इस तरह कि कोई कोशिश नहीं हुई। और आखिर में 1780ई.में इसकी कामयाब कोशिश हुई।

1780ई. में जेम्स आगस्ट हिकी ने "बंगाल गज़ट" या "कलकत्ता जनरल एडवटाइजर " शुरू किया गया। इसके प्रथम अंक में उसने अपना परिचय "माननीय कंपनी के मुद्रक "के रूप में दिया। इस पहले हिन्दुस्तानी समाचार पत्र के संपादक की कोशिश ये थी कि ज्यादा से ज्यादा मुलाजिमों के व्यक्तिगत जीवन से संबंधित ख़बरों को छापा जाय। और उसने ऐसा किया भी।और यह बात स्वीकार ने में तनिक भी संकोच नहीं होनी चाहिए कि भारतीय पत्रकारिता के शुरुवात के साथ ही हमारे यहाँ पीत पत्रकारिता की भी शुरुआत होती है।

हिक्की स्वतंत्र विचार का एक सरकारी मुलाज़िम था ,और इसकी निजी कोई चाहत नहीं थी।और शुरू के उसकी हालात-ए-ज़िंदगी से ऐसा सिद्ध भी नहीं हो पाता कि उसकी कोई बौध्दिक उपलब्धि संबंधी कोई महत्वाकांक्षा भी थी और उसके दो

पन्नों के समाचार पत्र में खुद गवर्नर-जनरल वारेन हेस्टिंगस सहित कंपनी के मुलाजिमों के निजी जीवन पर फूहड़ और अपमान जनक टिप्पणियों को खासा महत्व दिया जाता था।

और इस गलती की कीमत हिक्की को जल्द ही चुकानी पड़ी कि जब उसने श्रीमती हेस्टिंगस पर की गई एक व्यक्तिगत और भद्दी टिप्पणी और सिमौन ड्राज ,कर्नल थौमस पीयर्स तथा एक स्वीडिश मिशनरी जौन जचरिया कियरनांदर पर उसके समाचार पत्र में की गई "आपत्तिजनक" टिप्पणियों की उसे भारी कीमत चुकानी पड़ी ,और उसको प्रदान की गई डाक सुविधा उससे छीन ली गई।

हिक्की को इस बात कि भी सज़ा मिली कि उसने जो आरोप कियरनांडर पर जो आरोप लगाए थे उसको वो सिद्ध नहीं कर पाया। कियरनांडर पर हिक्की ने ये आरोप लगाया था कि वो मुख्य चर्च को बेचने वाला है ,लेकिन कियरनांडर नें गवर्नर-जनरल से मिलकर अपने को दोष मुक्त करा लिया। आखिर में झूठे आरोप लगाने इल्ज़ाम में हिक्की पर 4 मास की सज़ा और 500 रूपये का जुर्माना लगाया गया।

लेकिन हिक्की के निर्भीक पत्रकारिता पर इसका कोई असर नहीं हुआ और उसने अपने कलम के रफ्तार को बनाए रखा और उसने कड़े और आपत्तिजनक शब्दों में गवर्नर-जनरल तथा मुख्य न्यायधीश सर इलिजा एंपी पर आक्रमण करने का अभियान-सा छेड़ दिया।जवाब में सरकार द्वारा उनको गिरफ्तार करने की कोशिश हुई। लेकिन हिक्की साहब जल्द ही सुप्रीम कोर्ट में हाज़िर हो गए मानो कोर्ट को इसी दिन का इंतज़ार था। हिकी को तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया और ज़मानत के 80,000 हज़ार न दे पाने की वजह से उनको हिरासत में रख लिया गया।

और हिक्की ने अपनी साहसिक पत्रकारिता को जारी रक्खा और जेल में रहते हुए भी अख़बार के संपादन के काम को जारी रखा उसी तेवर के साथ। हिक्की पर जुर्मानों और सज़ाओं का जैसे दौर ही चल पड़ा। इतने सारे धक्के खाने के बावजूद वह हतप्रभ नहीं हुआ। आखिर में जुर्मानों के सबब उसकी माली हालत बद से बदतर होती गई। जिसकी वजह से वह टूट गया।

इसके बाद जिसने भी अख़बार निकालने की सोची उसने हिक्की पर हुए ज़्यादतियों से सबक लिया और बीच का रास्ता निकालकर चलने में ही अपनी भलाई समझी।

1780ई.में मेसेर्स बी.मेसनिक और पीटर रीड नें "इंडिया गज़ट" का प्रकाशन शुरू किया।इस समाचार पत्र को भारत का दूसरा पत्र माना जाता है। और इस समाचार पत्र का प्रकाशन "बंगाल गज़ट" के प्रकाशन के नौ माह बाद शुरू हुआ। "हिक्की गज़ट" के प्रकाशन के चार वर्ष बाद "कलकत्ता गज़ट" का प्रकाशन सीधे सरकार के संरक्षण में शुरू हुआ। इसके अगले वर्ष "बंगाल जर्नल" और मासिक पत्र "ओरिएंटल मैगजिन ऑफ कलकत्ता एम्यूज़मेंट " का भी प्रकाशन शुरू हुआ। हिक्की के प्रथम प्रयास के छह वर्षों के भीतर ही कलकत्ता से 1786 ई. में प्रकाशित "कलकत्ता क्रानिकल" को मिलाकर चार साप्ताहिक समाचारपत्र और एक मासिक पत्रिका के निकलने का क्रम शुरू हो गया था।

समाचार पत्रों के जो भी नए संपादक आए वो प्रायः बचने की कोशिश में थे। "कलकत्ता गज़ट" तो सरकारी प्रकाशन था ही। "कलकत्ता गज़ट" ने झुकने की हद करते हुआ यहाँ तक कह दिया कि वो सारे सरकारी विज्ञापन को मुफ्त में ही प्रकाशित करेगा। बस क्या था ! सरकारी कृपा दृष्टि इस पर बननी शुरू हो गई।

सरकारी अवरोध के बावजूद पूरे भारत में पत्रों के प्रकाशन का एक सिलसिला ही चल पड़ा। 1785ई.में "मद्रास कूरियर" के नाम से पहला समाचार पत्र मद्रास से प्रकाशित हुआ। इस पत्र के संस्थापक रिचर्ड जौनसन थे जो सरकारी मुद्रक भी थे।

1791ई.में "मद्रास कूरियर" के तत्कालीन संपादक ब्रायड नें त्यागपत्र देकर "हरकारू" नामक पत्र का संपादन शुरू किया। एक साल बाद उसकी मृत्यु हो जाने के पश्चात पत्र का प्रकाशन भी बंद हो गया। 1795ई।. तक "मद्रास कूरियर" का कोई प्रतिद्वंदी नहीं था। "मद्रास गज़ट" का प्रकाशन भी इसी वर्ष शुरू किया और इस पत्र के संपादक आर.विलियम्स थे। और

इस पत्र के प्रकाशन के कुछ दिनों बाद ही हम्फ्री नामक व्यक्ति नें "इंडिया हेराल्ड" का प्रकाशन बिना सरकारी अनुमति लिए शुरू किया। इसके इस साहस की सज़ा भी इसे जल्द मिली ,और इस पर अनधिकृत पत्र-प्रकाशन के महाभियोग के दौर से गुज़रना पड़ा।

मद्रास में प्रेस की इस उन्नति को ज़्यादा दिनों तक सत्तातंत्र द्वारा नहीं देखा जा सका और सेंसरशिप पहली बार मद्रास में ही 1795 ई.लगा ,जब "मद्रास गज़ट" को सरकार के सारे आम आदेश प्रकाशन से पूर्व सेना सचिव के सामने प्रस्तुत करना अनिवार्य कर दिया गया। और डाक की जो सुविधा दी गई थी उसे वापस ले ली गई और दोनों समाचारपत्रों द्वारा विरोध प्रकट किए जाने पर उनके वितरण पर शुल्क लगाने का फैसला कर लिया गया। इस तरह से सेंसरशिप नियमों के द्वारा मद्रास की पत्रकारिता को बांधने की पूरी कोशिश की गई।

मद्रास में पत्रकारिता के शुरुआत के करीब पाँच साल ने बाद मुंबई से भी पत्रकारिता की शुरुआत हुई। "मगरीबी बंगाल में उर्दू सहाफ़त" के अनुसार "बम्बई हेराल्ड" का प्रकाशन 1790 ई .में में शुरू हुआ।जबकि "भारतीय पत्रकारिता का इतिहास" के अनुसार इसका प्रकाशन 1789ई. में शुरू हुआ। ये बुम्बई से प्रकाशित होने वाला पहला समाचार पत्र था। उसके एक वर्ष के बाद "कूरियर" का प्रकाशन भी शुरू हुआ ,जिसमें गुजराती भाषा में विज्ञापन छपते थे। "बम्बई गज़ट" 1791ई. में प्रकाशित होना शुरू हुआ और अगले वर्ष इसमें "बम्बई हेराल्ड" का भी इसमें विलय हो गया।

मोटे तौर पर कहा जाए तो 1780 से 1857 के बीच लगभग दो सौ पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुए , इनमें बहुत सारे बहुत जल्द बंद भी हो गए। अत्यधिक दबाव के बावजूद कुछ समाचार पत्र लंबे समय तक प्रकाशित होते रहे और उन समाचार पत्रों में "इंडिया गज़ट"(1780-1834), "कलकत्ता गज़ट"(1784-1878), "एशियाटिक मिरर"(1788-1820), "द कलकत्ता मॉर्निंग पोस्ट "(1799-1878), "द ओरिएंटल स्टार "(1793-1820), "द कलकत्ता मंथल जर्नल " (1794-1841), "द बंगाल हरकारु"(1795-1857) आदि शामिल थे।

भारतीय पत्रकारिता का असली और स्थायी चेहरा तब सामने आया , जब 1818 ई .में जेम्स सिल्क "बकिंघम कलकत्ता जर्नल" के संपादक बन कर भारत आए। बकिंघम बहुमुखी प्रतिभा से युक्त पहला सच्चा पत्रकार था ,जिसने काफी ख्याति अर्जित की। अगर सच कहा जाए तो बकिंघम भारतीय पत्रकारिता का पहला पथ प्रदर्शक था जिसने भारतीय पत्रकारिता को सही राह दिखाई। अपने समय के कुचक्रों ,साजिशों,छिछोरेपन और चुगलखोरी से उस समय की भारतीय पत्रकारिता पूरी तरह से दूषित हो चुकी थी ,जिसको बकिंघम ने नई राह दिखाई। पहली बार ऐसा हुआ कि भारतीय समाचार पत्रों में भी साफ सुथरी राजनीतिक खबरें ,वाणिज्यिक,साहित्यिक समाचारों और विचारों को जगह मिलनी शुरू हुई।

बकिंघम के बारे में ऐसा कहा जाता रहा है कि वो पत्रकार से ज्यादा प्रगतिशील लेखक और विचारक था। जेम्स बकिंघम राजा राम मोहन राय का घनिष्ठ मित्र और उनके विचारों को पसंद करने वाला भी था। हालांकि दोनों कि दोस्ती बहुत विरोधाभास पैदा करती थी क्योंकि राजा राम मोहन राय स्वतंत्र स्वरूप वाले भारतीय प्रेस के हिमायती थे जब कि बकिंघम ब्रिटिश प्रेस के।

उस समय कि पत्रकारिता और वर्तमान समय कि पत्रकारिता कि बात कि जाए तो हम बहुत कुछ बकिंघम के जनसरोकार वाली पत्रकारिता से सीख सकते हैं। बकिंघम अंग्रेजी मूल के होने बावजूद भारत प्रवास के अपने दिनों तक शासन और सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोगों की बुराइयाँ उजागर करता रहा। अंततः उसका भारत प्रवास का लाइसेंस कर दिया गया जिससे वह भारत छोड़ने पर मजबूर हो गया।

चूंकि भारत में पत्रकारिता प्रारंभ करने का श्रेय अंग्रेजों को ही है इसलिए भारतीय पत्रकारिता के शुरुआती दौर में ज्यादातर पत्रकार विदेशी ही थे जिनका मुख्य मकसद ईस्ट इंडिया कंपनी के हितों कि रक्षा और ईसाई मज़हब का प्रसार। सही मायनों में भारतीय पत्रकारिता उस वक्त नहीं शुरू हो पाई थी।हाँ !इतना अवश्य हुआ कि पूरे भारत से पत्रों के प्रकाशन

की भूमिका ज़रूर इस नें तैयार की। और भूमिका तैयार होने के बाद जब शुरू हुई तो एक मिशन के रूप में। और इसी पत्रकारिता की बदौलत पूरे देश में स्वतंत्रता हासिल करने कि एक बेदारी पैदा हुई।

और इसका असर भी जल्द ही दिखा ,भारत के कोने-कोने से पत्र निकालने की मुहिम सी शुरू हो गयी। और इसकी शुरुआत भी भारतीय पत्रकारिता का मक्का कहे जाने वाली भूमि यानि बंगाल से ही हुआ। जहाँ तक भारतीय पत्रकारिता के विकास में किसी विशुद्ध भारतीय पत्रकार के योगदान की बात है तो उसमें सबसे ऊपर नाम आता है राजा राम मोहन रॉय का(1772-1833)का। इन्हें भारतीय पत्रकारिता का जनक माना जाता है। राजा राम मोहन रॉय के बारे में कहा जाता है कि वह मूलतः समाज सुधारक थे। सती प्रथा को ख़त्म करने और और उस समय के समाज में व्याप्त बुराइयों को ख़त्म करने में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। राजा राम मोहन रॉय के सहयोग से तीन प्रमुख समाचार पत्र निकले जो निम्नलिखित हैं-

- संवाद कौमुदी (बांग्ला)
- मिरातुलअख़बार(पर्शियन)
- ब्रहमिनिकल मैगज़ीन(इंग्लिश)

फिर बाद में भवानी चरण दास ने एक पत्र का प्रकाशन किया ,इस पत्र का नाम "संवाद कौमुदी" था। । लेकिन इस पत्र के साथ अफ़सोसनाक सूरत-ए-हाल ये रही की इसका प्रकाशन जब सिर्फ 13 ही अंक हुआ था तभी पत्र के संपादक और राजा राम मोहन राय में गहरे मतभेद उत्पन्न हो गए। और श्री बैनर्जी ने "संवाद कौमुदी" को इस लिए छोड़ दिया कि सती प्रथा और सामाजिक सुधारों के प्रश्न पर राजा राम मोहन राय और बैनर्जी के गहरे मतभेद पैदा हो गए। "संवाद कौमुदी" से अलग होने के बाद बैनर्जी ने एक साप्ताहिक पत्र निकालना शुरू किया।

"बंगाल गज़ट" का प्रकाशन 1816 ई . में हुआ। और इस पत्र के संपादक गंगाधर भट्टाचार्जी थे। यह समाचार पत्र सिर्फ एक साल तक ही चला। 1818 ई. में जॉन बर्टन और जेम्स मेकंजी नें "गार्जियन"नामक एक साप्ताहिक पत्र के प्रकाशन की अनुमति प्राप्त। सीरामपोर मिशनरी द्वारा तीन पत्रों का प्रकाशन शुरू किया गया जिनके नाम इस तरह से हैं-

- दिग्दर्शन (मासिक बंगाली पत्रिका)
- समाचार दर्पण(साप्ताहिक बांग्ला समाचार पत्र)
- फ्रेंड ऑफ इंडिया(मासिक अंग्रेजी पत्रिका) दोनों पत्रिकाएँ तो किसी वजह से नहीं चल सकी मगर "समाचार दर्पण"1940 ई .तक चला।

1821 ई . 1891 ई .बीच तीन अन्य पत्रों का प्रकाशन हुआ। इन पत्रों के प्रकाशन में भारतीय पत्रकारिता के जनक राजा राम मोहन राय ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन पत्रों के नाम निम्नलिखित हैं-

- द रेफार्मेर
- द इंकवायरेर
- ज्ञान अन्वेषण

यह तीनों पत्र प्रगतिवादी हिंदूवाद के प्रतिनिधि पत्र थे। भारत में पत्रिका की शुरुआत से लेकर आगे के चालीस सालों तक भारतीय पत्रिका पूरी तरह से अंग्रेजों के नियंत्रण में रही। कलकत्ता शहर पत्रों के प्रकाशन का प्रमुख केंद्र रहा। जहाँ शुरुआत अंग्रेजी से हुई , वहीं कलकत्ता से बाद में बांग्ला ,हिन्दी और फारसी भाषा के पत्र प्रकाशित हुए। कलकत्ता से ही उर्दू का पहला अख़बार भी प्रकाशित हुआ। यहाँ यह बात क़ाबिल -ए-ज़िक्र है कि हिन्दी पत्रकारिता की नीव भी कलकत्ता से ही पड़ी और "उदन्त मार्तण्ड ",जिसे हिन्दी का पहला समाचार-पत्र माना जाता है ,उस का प्रकाशन भी कलकत्ता से ही शुरू हुआ।

तत्कालीन सत्ता पक्ष के भारी विरोध के बावजूद कलकत्ता से समाचार पत्रों के निकलने का क्रम लगातार जारी रहा।और भारी सरकारी विरोध और परेशानियों के बीच बंगाल और बॉम्बे से 1831 ई.से 1833 ई.के बीच 49 नये समाचार पत्र प्रकाशित हुए। इनमें से 19 पत्र केवल बंगाल से प्रकाशित हुए। इस अवधि के दौरान छपने वाले 49 समाचार पत्रों में से 33 अंग्रेजी और 16 बांग्ला भाषा के थे।

जिन प्रमुख कारणों ने भारत में समाचार-पत्रों के प्रकाशन को प्रोत्साहन दिया उसके निम्न कारण महत्वपूर्ण थे-

1.भारतीयों में अंग्रेजी भाषा और शिक्षा का प्रसार
2.भारतीय समस्याओं के प्रति ब्रिटिश पत्रकारों की बढ़ती दिलचस्पी
3.सत्ता तंत्र द्वारा प्रकाशित पत्रों का मुख्य उद्देश्य सरकारी नियमों की जानकारी देना और जनता की हिमायत हासिल करना

बंगाल में उस समय के महान पत्रकार द्वारकानाथ टैगोर थे जिन्होंने अंग्रेजी में "बंगाल हेराल्ड "और बांग्ला में "बंगदूत" का प्रकाशन किया। उन्होंने "इंग्लिशमैन"नामक एक अन्य समाचार पत्र के प्रकाशन में अपने नैतिक और आर्थिक सहयोग दिया। उन्होंने ढेर सारे पत्रों को बंद होने से बचाया।

"इंडियन मिरर" नामी पत्र का संपादन मनमोहन घोष नें किया। बाद में इस पत्र को केशवचंद्र सेन ने खरीद लिया। और इस पत्र को पाक्षिक से दैनिक में बदल दिया।

आजादी के पहले आन्दोलन यानि 1857 ई.से पहले तक भारतीय भाषाओं में छपने वाले समाचार पत्रों कि संख्या काफी कम थी। जो भी पत्र प्रकाशित होते थे ,ईसाई मिशनरियों द्वारा ही प्रकाशित होते थे। प्रकाशित होने वाले पत्रों में तीन तमिल भाषा के,एक तेलगु और और उर्दू भाषा में भी कुछ पत्रों का प्रकाशन होता था ,जिनकी स्थिति अच्छी नहीं थी।

इस दौर में प्रकाशित होने वाले सभी पत्रों पर सत्ता तंत्र की प्रभावशीलता साफ देखी जा सकती थी और इस काल में छपने वाले ज्यादा तर भारतीय समाचार पत्र सत्ता तंत्र के हिमायती थे। इसके अलावा एकाध समाचार-पत्र ही ऐसे थे जो अंग्रेजों के भारत छोड़ देने के पक्षधर थे। इसी घमासान के बीच पूरे भारत से अंग्रेजी पत्रों के अलावा दूसरे भारतीय भाषाओं से भी पत्रों के निकलने का क्रम शुरू हुआ।

चार्ल्स मेटकाफ (Charles theophilus metcafe) ने भारतीय पत्रकारिता की काफी मदद की। उसने भारतीय पत्रकारिता को बढ़ावा देने के लिए तत्कालीन गवर्नर-जनरल विलियम बेंटिक से काफी कुछ नीतिगत परिवर्तन करवाया। इस नीतिगत परिवर्तन का ही असर था कि पूरे भारत से भाषाई पत्रकारिता ने सर उठाना शुरू कर दिया। और भारत के कोने कोने पत्रों से निकलने का सिलसिला शुरू हो गया।

" हिन्दी पत्रों का विकास "

भारतीय पत्रकारिता के शुरू होने के करीब 46 सालों के बाद हिन्दी का पहला पत्र "उदन्त मार्तंड" के रूप में हमारे सामने आया। "उदन्त मार्तंड " से प्रेरणा लेकर "बंगदूत"1829ई. "बनारसअख़बार" 1845ई. "सुधाकर"1850ई. "बुद्धिप्रकाश"1852ई. "मजहरुल सरूर "1852ई. "पयामे-ए-आज़ादी"1857ई. "कविवचन सुधा "1867ई.में "हरिश्चंद्र मैगज़ीन"1873ई. "बाल बोधिनी पत्रिका " 1874ई. "हिन्दी प्रदीप" 1877ई. "भारतमित्र" 1878ई "सारसुधानिधि"1879ई "उचितवक्ता" 1880ई "क्षत्रिय पत्रिका " 1881ई "भारत जीवन " 1884ई. आदि पत्र प्रकाशित हुए ,जिनके द्वारा तोड़ो गुलामी की जंजीरें ,बरसाओं अंगारा ,और सत्व निज भारत गहे ,का उद्घोष किया गया। वस्तुतः राष्ट्रीय चेतना के संपोषण तथा समाज के दिग्दर्शन के शुभ लक्ष्य से प्रेरित होकर हिन्दी पत्रकारिता का विकास हुआ।

हिन्दी पत्रकारिता के लिए सबसे अच्छी बात यह रही की इसका विकास उत्तरोत्तर होता रहा ,और इसी के फलस्वरूप 20वीं शताब्दी में हिन्दी भाषा के कई पत्र निकले और इन पत्रों भारतीय जनमानस में एक गहरी छाप छोड़ी। इन दिनों के हिन्दी समाचार पत्रों के विषय-वस्तु में मुख्य रूप से सामाजिक और धार्मिक मुद्दे ही हुआ करते थे। हालांकि पत्रों में शिक्षा,कृषि व व्यापार से जुड़ी ख़बरों को भी खूब जगह मिला करती थी। इस काल के प्रमुख समाचार पत्रों में "हिन्द केसरी" 1907 ई .था जो तिलक के मराठी पत्र का रूपांतरण था। इसी तरह "कर्मयोगी" 1910ई.में,मालवीय जी का "अभ्युदय" 1907ई.में "प्रताप" 1913ई.में और "ज्ञान शक्ति" 1916ई.में व्यापक तौर पर प्रकाशित हुए।

पत्रों के विकास के फलस्वरूप हिन्दी भाषा में अच्छे पत्रकार भी पैदा होने शुरू हो गए।जिन्होंने आज़ादी के आंदोलन को तेज करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ,उन्हीं पत्रकारों में से कुछ के नाम निम्नलिखित है-

नन्द कुमार देव शर्मा ,गंगा प्रसाद गुप्त ,हरिकृष्ण जौहर ,एम.पी.द्वेदी ,छोटे राम शुक्ल ,श्रीइंद्रा विद्यावाचस्पति ,मातादीन शुक्ल,शिवराम पाण्डेय ,लक्ष्मण नारायण गरदे ,नर्मदा प्रसाद मिश्रा ,झाबरमल,बनारसी दास चतुर्वेदी ,और शिवपूजन सहाय के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

हिन्दी पत्रकारिता जगत में 1920ई.का साल स्वर्ण अक्षरों में दर्ज करने के काबिल है क्योंकि इसी साल हिन्दी का प्रतिष्ठित पत्र "आज"का प्रकाशन शुरू था ,जो आज भी कुछ विषम हालात के बावजूद जारी है। श्री प्रकाश जी इस पत्र के पहले संपादक थे। महान पत्रकार श्री विष्णु पराड़कर जी उनके सहयोगी थे ,1923ई.में खुद पराड़कर जी ने संपादन की जिम्मेदारी निभानी शुरू कर। और उन्होंने अपनी मेहनत की बदौलत इस पत्र को शिखर की मंजिल तय कराई। पराड़कर जी ने महत्वपूर्ण 30 साल "आज" को दिये। पराड़कर जी नें अपने साथ ,उस वक्त के दो महत्वपूर्ण पत्रकारों को अपने साथ जोड़ा। एक थे लक्ष्मण नारायण गर्दे ,और दूसरे थे अंबिका प्रसाद वाजपेयी।

यहाँ पर इस बात का ज़िक्र करना बहुत ज़रूरी है कि विष्णु पराड़कर जी कोंग्रेस के प्रबल समर्थक हुआ करते थे लेकिन उन्होंने कभी भी हुकूमत के गलत नीतियों का साथ नहीं दिया बल्कि उन्होंने हमेशा उनका पुरजोर विरोध किया।

वर्तमान संदर्भ में पराड़कर जी के आज और उनके उसूलों से काफी कुछ सीखा जा सकता है कि दबाव में भी किस तरह से काम किया जा सकता है। हिन्दी पत्रकारिता पूरे अपने ओज़ के साथ बढ़ता रहा और 1923ई.में "अर्जुन" नामक पत्र का प्रकाशन शुरू हो गया। इसको शुरू करने वाले घनशयाम दास बिड़ला थे। लेकिन उनको कुछ सालों के जेल की वजह से समाचार पत्र को 1938 ई.तक बंद कर देना पड़ा। लेकिन जब इसको दुबारा शुरू किया गया तो "अर्जुन" समाचार पत्र का नाम "वीर अर्जुन" हो गया था। और यह समाचार पत्र आज भी जारी है।

हिन्दी समाचार पत्रों का विकास क्रमिक होता रहा। खास तौर से 1920 से 1940 के बीच हिन्दी भाषा के कई महत्वपूर्ण पत्र प्रकाशित हुए। उन्हीं में से कुछ महत्वपूर्ण पत्रों के नाम इस तरह से हैं- "सैनिक"(1928,आगरा), "शक्ति" (लाहौर,1930), "प्रताप" (कानपुर), "नवयुग" (देहली), "नवराष्ट्र" (बॉम्बे), "भारत" (1933,इलाहाबाद) "लोकमत" (1931,नागपुर) "लोकमान्य" (कलकत्ता,1930) "विश्वमित्र" (कलकत्ता,1917), "नवभारत" (नागपुर,1934),

"अधिकार" (लखनऊ,1938), "उजाला" (आगरा,1940), "आर्यवर्त" (1992,पटना), "सन्मार्ग" (काशी,कलकत्ता,1946,ये तो हुई हिन्दी दैनिकों की बात।

मगर पत्रिकाओं के निकलने का एक दूसरा क्रम यह है कि हिन्दुस्तान से बड़े पैमाने पर हिन्दी पत्रिकाएँ भी निकली जिनका एक अलग इतिहास है। इन पत्रिकाओं नें भी भारतीय जनमानस को हिस्सों को बहुत ज्यादा प्रभावित किया।

हिन्दी पत्रकारिता के विकास का क्रम जारी है। आज हिन्दुस्तान के ज्यादातर हिस्सों से हिन्दी समाचार पत्र निकल रहे हैं। एक समाचार पत्र समूह के कई सारे पत्र निकल रहे हैं। इसके अलावा ज्यादा तर पत्रों नें इंटरनेट पर भी अपनी मज़बूत दस्तक दी है।

उपसंहार-

भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में हम पत्रों कि उत्पत्ति और उनके विकास के क्रम को समझ चुके हैं मगर वर्तमान में क्या स्थिति है यह जानना भी बहुत आवश्यक है। आज़ादी के बाद भारतीय पत्रकारिता के मूल्यों में भारी अन्तर आया है। पत्रकारिता के उद्देश्य अब पूरी तरह से बदल चुके हैं। भारत दुनियाँ के उन चंद भाग्यशाली देशों में शामिल है जहाँ पर प्रेस को आज़ादी मिली हुई है। प्रेस जनता की समस्याओं को उजागर कर सकता है। सरकार की कमियों को लिख-लिख कर पृष्ठ के पृष्ठ काले कर सकता है। प्रिन्ट वर्तमान में राष्ट्रीय मीडिया से लेकर भाषाई मीडिया तक रोटरी कि दुनियाँ से बाहर निकल चुके हैं। कुछ आफ़सेट से भी आगे निकल उससे से भी आधुनिक मशीनों का इस्तेमाल कर रहें हैं।एक-एक पत्रों के दर्जनों संस्करण निकल रहें हैं। मीडिया के उद्योग में बदल जाने के बाद क्रास मीडिया ओनरशिप का चलन तेजी से बढ़ा है। भारत के ज्यादातर उद्योगपती मीडिया उद्योग में पैसा लगाना एक फ़ैशन समझते हैं ,और दिल खोलकर इसमें पैसा लगा रहे हैं। एक ही ग्रुप के पास मीडिया के साथ रेडियो ,टेलीविज़न,और न्यू मीडिया के अधिकार प्राप्त हैं। प्रिन्ट में भी वो कई भाषाओं के पत्र एक साथ निकाल रहे हैं जबकि एलेक्ट्रोनिक और रेडियो में भी यही सूरत है। हिन्दी ,अंग्रेजी के साथ साथ ज्यादातर भाषाई पत्र भी इंटरनेट पर ई.पेपर और ऑनलाइन पेपर के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुके हैं। बेहतरीन ले-आउट डिजाइन और उम्दा क्वालिटी के कागज पर वर्तमान के समाचार पत्र प्रकाशित हो रहे हैं।पेड न्यूज़ और सरोगेट न्यूज़ से भारतीय मीडिया पूरी तरह से घिरी हुई है।

भारतीय प्रेस के संसाधनों में वृद्धि तो हुई है लेकिन उसका संजीदापन कहीं खो गया है। लेकिन इन सब के बावजूद जैसे जैसे भारतीय साक्षरता दर में वृद्धि होगी भारतीय मुद्रण मीडिया में भी वृद्धि होगी। इसके अलावा कई सर्वे भी इस तरह के हुए हैं जो इस बात को साबित कर रहे हैं कि समाचार पत्र पढ़ने वालों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ ही रही है।

संदर्भ सूची-

1- वैदिक , डॉ.वेद प्रताप ,हिन्दी पत्रकारिता – हिन्दी बुक सेंटर दिल्ली - 1992
2- नटराजन, जे. , भारतीय पत्रकारिता का इतिहास - प्रकाशन विभाग , नई दिल्ली
3-मेहदी, सैयद मुमताज़, हैदराबाद के उर्दू रोज़नामों की अदबी खिदमात- एन.सी.पी. यू.एल ,नई दिल्ली,1998
4- तिवारी, डॉ.अर्जुन, हिन्दी पत्रकारिता का बृहद इतिहास , वाणी प्रकाशन,दरियागंज,नई दिल्ली